The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol 1, Issue 1 - 2017

पर्यटन: भाषा और साहित्य
(देवनगरी सिरोही के प्रमुख धार्मिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन स्थल)

अमृत लाल जीनगर*

शोध सारांश

अरावली की गोद में सुशोभित यह दिव्य देवनगरी जिसका धार्मिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से पर्यटन के क्षेत्र में विशेष महत्त्व है। 'शिव' को समर्पित, देवों के देव महादेव सार्णेश्वर सिरोही में विराजित है जिनकी दिव्य दृष्टि क्षेत्र के समस्त जीवों के लिए वरदान है। देवनगरी में धार्मिक एकता एवं वसुधैवकुटुम्बकम् की भावना को दर्शाने वाला सर्वधर्म मंदिर है। यह नगरी 'अर्बुदांचल' में विराजमान होकर सम्पूर्ण सिरोही को प्रकाशमान कर रही है। प्रमुख पर्यटन स्थल होने के बाद भी व्यापक प्रचार–प्रसार के अभाव में अनेक क्षेत्र केवल क्षेत्रीय पर्यटन स्थल बनकर रह गये हैं। यदि सरकारी पर्यटन विभाग द्वारा इनका व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाए तो देशी–विदेशी पर्यटकों के लाभान्वित होने के साथ–साथ पर्यटन स्थलों का धार्मिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से विकास होने की पूर्ण संभावनाएँ बनी रहती है।

शब्दकुंजी: भाषा, साहित्य, धार्मिक, ऐतिहासिक, पर्यटन, क्षेत्र, देवनगरी, सिरोही।

राज्य के दक्षिण–पश्चिम में स्थित सिरोही जिला पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणीय है। देवनगरी सिरोही राजस्थान का पर्वतीय एवं सीमावर्ती जिला है। सुप्रसिद्ध इतिहासकार 'कर्नल जेम्स टॉड' के अनुसार सिरोही का मूल नाम 'शिवपुरी' था।[1] यह क्षेत्र मौर्य, क्षत्रिय, हुण, परमार, राठौड़, चौहान, गुहिल आदि विविध शासकों के अधीन रहा हैं। प्राचीनकाल में यह क्षेत्र 'आबुंद' प्रदेश के नाम से जाना जाता था। सिरोही को 'सरगवा' नाम से जानी जाने वाली पहाड़ियों पर देवड़ा राजा रायमल के पुत्र शिवभान ने एक किले की स्थापना की और शिवपुरी को 1405 ई. में बसाया था। 1425 ई में राजा शिवभान के पुत्र सहसमल ने शिवपुरी स्थान से लगभग चार कि.मी. आगे एक नया नगर बसाया था, जिसे वर्तमान में सिरोही के नाम से जाना जाता है।[2] यह एक जिला मुख्यालय भी है।

सिरोही जिला अपने इतिहास के लिए काफी प्रसिद्ध रहा है। यह पश्चिम में जालोर, उत्तर में पाली, पूर्व में उदयपुर और दक्षिण में गुजरात के बनासकांठा जिलों से घिरा हैं। इस जिले को प्राचीन काल में 'अर्बुदांचल' के नाम से जाना जाता था।[3] अर्बुदांचल क्षेत्र अपनी ऐतिहासिकता के लिए काफी प्रख्यात रहा है। अर्बुदांचल क्षेत्र में किले, महल व मंदिर अपनी ऐतिहासिकता के लिये भारतवर्ष में विख्यात है। यहाँ के मंदिर अपने इतिहास व प्राचीनता के लिए जाने जाते है।

*शोधार्थी, हिन्दी विभाग, माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा, राजस्थान।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

प्राचीन मंदिरों की कलाकृति एक चमत्कार के तौर पर सिरोही को और भी आकर्षक बनाती है जो सिरोही की समृद्धि का एक जीवंत उदाहरण है। सिरोही का नाम विश्व के उन स्थानों मे है जो अपने यहाँ आने वाले पर्यटकों को बहुत कुछ देता है।

मंदिरो और आध्यात्मिक स्थलो के बीच स्थित देवनगरी सिरोही का महत्त्व इस कारण भी है कि देवनगरी की आध्यात्मिक और मनोरम दृश्यों के बीच अनेक ऐतिहासिक मंदिर हैं। ऋषि–मुनियों और देवताओं की जन्म स्थली कही जाने वाली इस जगह पर देवताओं द्वारा बसाया गया यह सिरोही काफी लोकप्रिय है। यह अरावली पर्वत श्रृंखला की पहाड़ियों के बीच में बसा है, जिस कारण इसकी खुबसूरती सिर चढ़कर बोलती है।

देवनगरी की खुबसूरती की अपार विशेषताओं के कारण सिरोही देशो–विदेशी पर्यटकों की नजरों में बसे बगैर नहीं रहता हैं। यहाँ दूर–दूर तक फैले हरे–भरे मैदान, खेत–खलिहान आदि के दृश्य आँखों को शांति पहुँचाते हैं। सिरोही की रंगीली धरती के रंग भी निराले है। कहीं ऊँची नीली अरावली की पहाड़ियाँ है, तो कहीं गुरू शिखर और कहीं पठार तो कहीं मैदान है। राजा–महाराजाओं के इतिहास तथा शौर्य–पराक्रम एवं बहादुरी का प्रतीक मानी जाने वाली यहाँ की 'तलवार' बहुत ही मजबूत एवं आकर्षक होती है, सिरोही की तलवार विश्व ख्याति प्राप्त है।

कला और उसके प्रेमियों के लिए सिरोही एक स्वर्ग से कम नहीं है। यहाँ का सार्णेश्वर महादेव मंदिर, सर्वधर्म मंदिर, आकर्षक पावापुरी, श्री जीरावला, सिरपुर, चन्द्रावती नगरी, देलवाडा जैन मंदिर, गौमुख मंदिर, नक्की झील, गुरुशिखर, अचलगढ़, अधरदेवी मंदिर, मंदाकिनी कुंड, हनीमुन प्वाइंट एवं सनसेट प्वाइंट, सिरोही किला, प्राचीन हवेलियों पर उत्कीर्ण स्थापत्य कला सैलानियों के दिल को छूकर देवनगरी सिरोही के गौरव से परिचय कराती हैं।

सिरोही जिले के प्रमुख धार्मिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन स्थल[4]

देश–विदेश से अनेक पर्यटक यहाँ पर्यटन स्थलों की सैर करने के लिए आते रहते हैं, जिनका विस्तृत विवरण इस प्रकार है–

सरकारी संग्रहालय

देवनगरी सिरोही के सरकारी संग्रहालय की स्थापना सन 1962 में की गई थी। इसके पहले हिस्से में पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के हथियार, वाद्य यंत्र, महिलाओं के गहने तथा वस्त्र प्रदर्शित किए गए हैं। संग्रहालय का मुख्य आकर्षण 6ठीं से 12वीं शताब्दी के बीच की देवदासी एवं नर्तकियों की मूर्तियाँ, चक्रबाहु शिव की प्रतिमा, 404 प्राचीन मूर्तियों का संग्रह और विष कन्या की प्रतिमा शामिल है, जो पर्यटको के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

सार्णेष्वर मंदिर

सार्णेश्वर मंदिर भगवान 'शिव' को समर्पित है। इस मंदिर का संचालन सिरोही देवस्थान विभाग द्वारा किया जाता है। मंदिर के भगवान 'शिव' चौहान संप्रदाय के कुल देवता है। इस मंदिर का निर्माण परमार वंश के शासकों ने करवाया था क्योंकि मंदिर का ढाँचा और आकार परमारों द्वारा बनवाएं गए अन्य मंदिरों जैसा ही हैं। विक्रम संवत 1526 में महाराव लखा की रानी अपूर्वा देवी ने मंदिर के मुख्य द्वार के बाहर हनुमान जी की प्रतिमा स्थापित करवाई थी। मंदिर परिसर में भगवान विष्णु की प्रतिमा और 108 शिवलिंगों को धारण किए एक प्लेट रखी है।

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

सर्वधर्म मंदिर

देवनगरी में धार्मिक एकता एवं वसुधैवकुटुम्बकम की भावना को दर्शाने वाला यह सर्वधर्म मंदिर है। इस मंदिर का वास्तुशिल्प बहुत ही आकर्षित है तथा विभिन्न देवी–देवताओं की मूर्तियाँ है जो मंदिर के आस–पास अंदर तथा ऊपर देखी जा सकती है। पर्यटकों के लिए यह एक ऐसा आधुनिक धार्मिक स्थल है जो राष्ट्रीय एकता और सर्वधर्म समभाव की शिक्षा देता है। यहाँ धार्मिक महत्त्व के वृक्ष जैसे–रूद्राक्ष, कल्पवृक्ष, कुंज, करसिंगार, बेलपत्र आदि उगाए गए हैं।

गौतम ऋषि मंदिर

गौतम ऋषि महादेव का मंदिर पश्चिमी राजस्थान के सिरोही जिले के पोसालिया गॉव में स्थित है। यह मंदिर पाली जिले की सीमा पर अरावली की सुरम्य पहाड़ियों में सूकड़ी नदी के किनारे पर स्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष अप्रेल माह की 13 से 15 तारिक तक तीन दिवसीय मीणा जनजाति समाज के लोगों का बड़ा मेला भरता है। मीणा जाति के लोग इस मेले को 'भूरिया बाबा' के नाम से जानते इस मेले की प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ सुकड़ी नदी में मेले के तीन दिन तक 'गंगा' का अवतरण होता है और आश्चर्य की बात यह है कि अकाल के समय भी यहाँ तीन दिन तक नदी में जल प्रवाहित होता है।[9]

चन्द्रावती नगरी

इसका वर्तमान नाम 'चंदेला' है। परमार 10वीं और 11वीं शताब्दी में अबरूदमंडल के शासक थे और चन्द्रावती उनकी राजधानी थी। यह नगर सभ्यता, वाणिज्य और व्यापार का मुख्य केन्द्र था। चूंकि यह परमारों की राजधानी था इसलिए सांस्कृतिक रूप से यह बहुत समृद्ध था। चन्द्रावती तत्कालीन वास्तुशिल्प का बहुत अच्छा उदाहरण है। सन 1972 में आबूरोड़ शहर में बाढ़ आने से इसके कई अवशेष टूट गए। फलस्वरूप में इन्हें आबू संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है।[7]

पावापुरी तीर्थ

यह विशाल पवित्र धाम 90 हजार वर्गफुट जमीन पर बनवाया गया है। मंदिर में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ की विशाल मूर्ति बनी हुई है।[8] पावापुरी तीर्थधाम मे मंदिर के अतिरिक्त उपाश्रय, भोजनशाला, धर्मशाला, बगीचें, तालाब व गौशाला भी बनी हुई है। गौशाला का निर्माण मंदिर परिसर में लगभग 1 कि.मी. क्षेत्र में 500 बीघा जमीन खरीदकर करवाया गया है। जिसमें लगभग 5000 पशुओं को यहाँ रखकर अत्याधुनिक तकनीक से पालन–पोषण किया जाता है। गौशाला का संचालन 'के.पी. संघवी चेरीटेबल ट्रस्ट' द्वारा द्वारा ही किया जाता है।

श्री जीरावला

राजस्थान की भूमि हजारों गगनचुंबी तीर्थों के गगनचुंबी शिखरों से सुशोभित एवं अलंकृत है उन सभी में एक जैन तीर्थ है–श्री जीरावला तीर्थ।

नीरपुर मंदिर

यह संगमरमर से बना राजस्थान का सबसे पुराना मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण 9वीं शताब्दी में राजपूत काल में किया गया था। इसकी नक्काशी देलवाड़ा और रणकपुर के मंदिरों के स्तंभों और परिक्रमा की याद दिलाती है। यह मंदिर जैनों के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ को समर्पित है। इस मंदिर को गुजरात के सुल्तान महमूद बेगड़ा ने 13वीं शताब्दी में ध्वस्त किया था। 15वीं शताब्दी में इसका पुनःनिर्माण करवाया गया।[10]

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

आबूपर्वत (माउंट आबू)

आबूपर्वत सिरोही को दो भागों में विभाजित करता है जिनमे से एक भाग पहाड़ों से घिरा हुआ, हरा–भरा है और दूसरा भाग शुष्क है। माउंटआबू सिरोही का ही नहीं राजस्थान का भी एकमात्र हिल स्टेशन आबूपर्वत का नाम 'अबरूदा नामक साँप के नाम पर पड़ा था जिसने भगवान शिव के प्रिय वाहन नंदी की रक्षा की थी।[11] माउंटआबू के प्रमुख पर्यटन स्थलों में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, देलवाड़ा जैन मंदिर, गौमुख मंदिर, अचलगढ़, अधरदेवी मंदिर, मंदाकिनी कुंड, हनीमुन प्वाइंट, सनसेट प्वाइंट तथा नक्की झील, आदि पर्यटकों को आकर्षित करने वाले स्थान है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का अन्तरराष्ट्रीय मुख्यालय देवनगरी सिरोही के आबूपर्वत में स्थित है।

देलवाड़ा जैन मंदिर

देलवाडा जैन मंदिर माउंटआबू मे अवस्थित है। यह पाँच मंदिरों का समूह हैं जिनमें– विमल वसाही मंदिर, लुना वसाही मंदिर, पीथालहर मंदिर, खरतार वसाही मंदिर, श्री महावीर स्वामी मंदिर। ये सभी मंदिर एक–दूसरे से भिन्न हैं तथा इन मंदिरों में सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्राचीन 'विमल वसाही मंदिर' है जो प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव को समर्पित है। यह मंदिर 1031 ई. में बना हुआ है। इसी तरह 'लुन वासाही मंदिर' 22वें तीर्थंकर नेमीनाथ भगवान को समर्पित है जो 1231 ई. में दो भाइयों वास्तुपाल एवं तेजपाल के द्वारा बनवाया गया था।[13] देलवाड़ा जैन मंदिरों के स्तम्भों में नृत्यांगनाओं की आकृतियाँ बनी हुई हैं।

अधर देवी मंदिर

यह मंदिर आबूपर्वत का धार्मिक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। यह भारत के 52 शक्तिपीठों में से एक 6ठा शक्तिपीठ है। यह मंदिर ऊँची चोटी पर बन हुआ है और देवी माँ दुर्गा कात्यायनी को समर्पित है। यह मंदिर एक गुफा के अंदर स्थित है। माता के दर्शन हेतु श्रद्धालुओं को मंदिर तक पहुँचने के लिए 365 सीढ़ियाँ चढ़कर जाना होता हैं।[14] ऐसा माना जाता है कि यहाँ की प्रत्येक सीढ़ी एक वर्ष के एक दिन का प्रतीक है।

रघुनाथजी मंदिर

हिन्दू पंडित श्री रागानंद ने 14वीं शताब्दी में इस नंदिर का निर्माण करवाया था।[15] भगवान विष्णु को समर्पित इस मंदिर में काफी सख्या में ऐसे भक्त आते हैं जो हिन्दू धर्म के वैष्णव पंथ के अनुयायी है। भित्ति चित्रों और जटिल नक्काशियों से सुसज्जित यह मंदिर मारवाड की संस्कृति और वास्तुकला की विरासत का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

अचलगढ़ किला

यह आबूपर्वत का एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है, अचलगढ राजसाची में स्थित एक छोटा सा गाँव है। यह अचलगढ किले के लिए बहुत प्रसिद्ध है, जो आबूपर्वत से 11 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। परमार वंश के राजाओं द्वारा बनवाये गये इस किले का पुन: निर्माण ईसा पश्चात 1452 में मेवाड़ के राजा राणा कुम्भा द्वारा करवाया गया था।[16]

अचलेश्वर मंदिर

अचलगढ़ किले के परिसर में अचलेश्वर महादेव का मंदिर है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर में स्थित चट्टान पर भगवान शिव

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

के पदचिह्न है। इस मंदिर में भगवान शिव के प्रिय बैल नदी की पीतल की बड़ी मूर्ति तथा पत्थर की भैसों की तीन बड़ी मूर्तियाँ भी स्थित हैं। इस किले में कई जैन मंदिर भी हैं जो इस स्थान के धार्मिक महत्त्व को बढ़ाते है।

दत्तात्रय मंदिर

यह मंदिर अरावली पर्वत श्रृंखला की सबसें ऊँची चोटी गुरू शिखर पर उत्तर–पश्चिम में स्थित है। धार्मिक आस्था का प्रतीक यह मंदिर गुरू दत्तात्रय को समर्पित है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार यहाँ के लोगों का ऐसा विश्वास है कि भगवान दत्तात्रय ब्रह्मांड की दिव्य त्रिमूर्ति–ब्रह्मा, विष्णु और महेश के अवतार है। इसके अतिरिक्त पर्यटक गुरू दत्तात्रय की माता अहिल्या देवी को समर्पित मंदिर का भ्रमण भी करते है।

नक्की झील

राजस्थान का 'शिमला' कहा जाने वाला माउंटआबू में नक्की झील पहाड़ों के बीचों–बीच स्थित बहुत ही खुबसूरत झील है। यह भारत की एकमात्र कृत्रिम झील है जो सागुद्र तल से 1200 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इस झील के बारे में पौराणिक मान्यता है कि माउंटआबू की हसीन वादियों में एक प्रेमी 'रसिया बालम' ने अपने प्यार के लिए अपने नाखुनों से इसका निर्माण किया था। इसलिए इसका नाम नक्की झील रख गया था।[17]

विविध धर्मो के मंदिरों एवं ऐतिहासिक स्थलों के साथ देवनगरी सिरोही क्षेत्र में हिन्दू, जैन, वैष्णव, शैव आदि विविध धर्मों के मंदिर अधिक मात्रा में बनाये गये है, जो सिरोही जिले की एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक निधि के रूप में वर्तमान में संरक्षित है तथा क्षेत्र विशेष के पर्यटन का विकास करने में प्रमुख भूमिका निभा रहे है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. सिरोही राज्य का इतिहास–पं. गौरीशंकर हिराचंद ओझा, आर. जो. प्रकाशक गुवाहटी, 1995.
[2]. http://www.abutimes.com/history-of-sirohi-district-abutimes.
[3]. राजस्थान में पर्यटन उद्‌भव, विकास एवं वर्तनान स्थिति–डॉ. मोहन लाल गुप्ता, शुभद्रा प्रकाशन, जोधपुर।
[4]. माउंट आबू का सफर–वेलाराम एम. पटेल, ऑनलाईन। पोस्ट, सोमवार, अप्रेल 20, 2015.
[5]. गौतम ऋषि (https:/hi.m.wikipedia.org/wiki).
[6]. परमार राजवंश का इतिहास–डॉ. डी. जी. गांगुली, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर।
[7]. पावापुरी तीर्थ (https://hi.wikipedi.org/wiki).
[8]. http://www.tourismguideindia.com/sirohi.htm.
[9]. https://en.wikipedia.org/wiki/Mirpur_Jain_Temple
[10]. माउंट आबू का सफर–वेलाराम एम. पटेल, ऑनलाईन पोस्ट, सोमवार, अप्रेल 20, 2015.
[11]. प्रजापिता ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय (https://hi.wikipedi.org/wiki).
[12]. देलवाड़ा जैन मंदिर (http://hindi.nativeplanet.com/mount-abu/attractions/dilwara-jain-temples).
[13]. राजस्थान के प्रमुख दुर्ग–डॉ. राघवेन्द्र मनोहर, राजस्थानी हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
[14]. राजस्थान इतिहास, कला संस्कृति भाषा एवं साहित्य के परिप्रेक्ष्य में, पेपरबेक, 2014.
[15]. राजस्थान के लोक देवी–देवता, महेन्द्र मानावत, देवस्थान विभाग राजस्थान, उदयपुर, 2004.

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

[16]. उन्नीसवीं सदी के राजस्थान का सामाजिक व आर्थिक जीवन, कालूराम शर्मा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

[17]. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, जयसिंह नीरज व भगवती लाल शर्मा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1989.

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.